

शिक्षाशोधनवालकाय



ॐ कं क्रीं कं ४ स्वाहा कृपाय

तर्पयामि नमः ४॥

ॐ श्रीं श्रीं स्वाहा कृत्त पूजवदकनाथ ॥

ॐ मं मं मं ग ४ नमो स्वाहा कृत्त

गोपधनी ॥

ॐ हं हं स्वाहा कृत्त त्रिभुद्धिरुदा नकं ॥

ॐ हं हं मं स्वाहा कृत्त नवात्मानं ॥

ॐ हं हं स्वाहा कृत्त पुनर्पदिकिरुदा नकं ॥

ॐ मं स्वाहा कृत्त धीवधीक्रमरुदा नकं ॥

ॐ हं हं मं स्वाहा कृत्त कथनय

स्वधकिमसिरी ॥

ॐ स्वाहा कृत्त वक्रायथी विष्ट ॥ धर्ममा

रुकागधर्मी ॥

कं स्वाहा कृत्त माहवधनी ॥

वं स्वाहा कृत्त कोमा नी ॥

हं स्वाहा कृत्त विष्णु धी ॥

रं स्वाहा कृत्त वानादी ॥

पं स्वाहा कृत्त ॐ स्वाहा ॥

वं स्वाहा कृत्त चासुधु ॥

धं स्वाहा कृत्त मनस्य ॥

ॐ हं स्वाहा कृत्त उज्ज्वलं दर्वी ॥

मं हं मं यथार्थ ॥

ॐ धि किटि धि किटी कट कृत्तुया

नीधनी हृदय मरुत्ता निका वि

धं स्वाहा ॥

ॐ हं हं मं स्वाहा कृत्त क्रमक

क्रीधनयमयथी क्रमक कृत्तुका

ॐ तर्पयामि नमः ४॥ ३॥

ॐ मं स्वाहा कृत्त स्वधु ॥

ॐ हं हं मं स्वाहा कृत्त मिश्रवा

कं हं हं नव ॥

ॐ हं हं मं स्वाहा कृत्त कृत्तु

धनयथी कृत्तु कं धननी तर्पयामी

ॐ हं हं मं स्वाहा कृत्त

धननी ॐ स्वाहा ॥

[illegible]

कूं खान्धी को मानी देवी ॥
 वूं खान् ॥ हूं खाना ॥
 १ सें खाने ॥
 उं कीं कूं कूं कूं को नमः स्वा
 ल्धी सिद्धि लक्ष्मी देवी ॥
 को कीं कूं कूं कूं खाना
 धी नमि ॥ हूं हूं हूं हूं
 मां मूं मूं मूं मां मां मां मां
 ल्धी ॥ हूं हूं हूं हूं
 को कीं कूं कूं कूं
 खान्धी वानको ॥ मां मां मां मां
 को कीं मां खान्ति ॥ गुं गुं गुं
 भन नलो कं धनाय सूर्याय व
 न्धी विवि वि भनाय न
 हाने ॥
 मां मां खान्धी रो मधनाय न
 वूं वूं पदी ॥ किं संहिरी ॥



ॐ अस्य श्रीपंचश्लोकी महासरस्वती स्तोत्र मंत्रस्य दृढस्य तिष्ठति रतु सुदृढः श्रीमहासर
 अधाय ॥ दारुणस्य ॥ ॐ वज्राय ॥ सक्तये ॥ उरुगताय ॥ खड्गाय ॥ पाशाय ॥ धजाय ॥
 गदाय ॥ त्रिशूलाय ॥ चक्राय ॥ कमंडलाय ॥ १० ॥ दधुसमूलेन च्युजाली ॥ ११
 ॥ पूतधूपदीपेनैवेद्य ॥ जप ॥ स्तोत्र ॥ श्रीवृहस्पति उवाच ॥ सरस्वती तस्य
 मिवेतनी हृदि संस्थिता ॥ कंठे यस्य पद्मयोनी माया बीजं प्रियां शुभा ॥ १२ ॥ मुक्ति
 दीवरदीपैव ॥ सर्वकामफलप्रदा ॥ केशवस्पी प्रिया दिवी वीना हस्तो वरप्रदा ॥
 स्वतिदेवता मम चतुर्दश महाविद्या प्राप्ता येन जपे विनियोग ॥ ३
 सुभगां सोभनप्रिया

॥ मोक्षप्रदां सुधातित्या ॥ मज्ञानतिमिरापह्नी ॥ २
 २ ॥ मंत्रप्रदां सदाधेयी कुमतिर्ध्वं शकारकी ॥ सुप्रकाशातिशयं वामज्ञानति
 मिरापह्नी ॥ ३ ॥ अदित्यमण्डलेतीर्णा प्रणमामि जनप्रिया ॥ ४ ॥ पद्मे परि
 स्पीकुंडलिनी ॥ शुक्लवस्त्री मनोहरा ॥ ज्ञानकरं जनदीपा ॥ भक्तजा श्रविनाशि
 नी ॥ ५ ॥ इत्यस्तु तदा देवी वागीशेन महात्मना ॥ आत्मानं दर्शयामासुः श
 रदिंदुसमप्रभा ॥ ६ ॥ श्रीसरस्वती उवाच ॥ दत्तं ते निर्मलं कुमतिर्ध्वं शकार

ज्ञानं

कसोत्रेणातेनयेभक्त्या. मास्तुवंति सदा नरः॥ ७॥ लभतेपरमंभक्तार्तं. मम
 तुल्यपरमकर्म॥ कवित्वंमत्प्रसादेन प्राप्नोतिस्ममनोगता॥ ८॥ त्रिसंध्यं प्र
 यतोभूत्वा यद्दृष्टतेनरः॥ तस्यकंठे सदा वासंकरिष्यामि न संशयः॥ ९॥
 इति श्रीरुद्रयामले वृहस्पतिकृते पंचश्लोकी महासरस्वतिस्तव राजस्तोत्रं
 समाप्तं॥ ॥ ध्येतेति मचा मामया मुदे सतयावु. ववुत मचायामे

म कुशान इयावोकाय॥ कसिन्त्रो. ताय वृहाया मचायामे स इले॥ -
 लुया लिखित मेम मंत्रचोये. सलाइ सुचोड० देवता मेम आवाहृत
 या नाव. मे सोधन धाल १००० अथवा १०००॥ मोड नुत्ये॥ देवदक्षि
 णा॥ देवयाथा सह्य सलिकाय॥ सीहार मुद्रान देवता विसर्जित॥ ॥ सु
 र्यसाधि॥ लुलिखिद क्षिणा सहवाह्यरायात विय॥ इति वालकस्य

इति श्रीरुद्रयामले
 वृहस्पतिकृते पंचश्लोकी
 महासरस्वतिस्तव राजस्तोत्रं
 समाप्तं॥